

## कोविड-19 काल में दिल्ली की प्रिंट मीडिया संस्कृति और पत्रकारों की कार्य परिस्थितियों का अध्ययन

विनोद कुमार गुप्ता, शोधार्थी, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

और डॉ. अशोक कुमार मीणा, अनुसंधान पर्यवेक्षक, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

Accepted 03 August, 2024

### सारांश

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर मीडिया उद्योग को गहराई से प्रभावित किया है। दिल्ली में प्रिंट मीडिया संस्थानों और पत्रकारों को इस दौरान अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ा। प्रस्तुत शोध पत्र में महामारी के दौरान दिल्ली की प्रिंट मीडिया संस्कृति में आए परिवर्तनों और पत्रकारों की कार्य परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि तकनीकी एकीकरण, दूरस्थ कार्य प्रणाली, और डिजिटल माध्यमों पर बढ़ती निर्भरता ने पारंपरिक प्रिंट पत्रकारिता के स्वरूप को मौलिक रूप से बदल दिया। पत्रकारों को स्वास्थ्य जोखिम, आर्थिक असुरक्षा, और तकनीकी अनुकूलन की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों शोध विधियों का उपयोग करते हुए दिल्ली के प्रमुख प्रिंट मीडिया संस्थानों के पत्रकारों और संपादकों से साक्षात्कार और सर्वेक्षण किया गया। निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि महामारी ने प्रिंट मीडिया में संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण को तीव्र कर दिया, साथ ही न्यूज़रूम संस्कृति में स्थायी परिवर्तन लाए।

**मुख्य शब्द:** कोविड-19, प्रिंट मीडिया, पत्रकार, कार्य परिस्थितियाँ, दिल्ली

### 1. प्रस्तावना

कोविड-19 महामारी ने मार्च 2020 से विश्वभर में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को अप्रत्याशित तरीके से प्रभावित किया। भारत में लॉकडाउन के दौरान मीडिया उद्योग को विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यूरिसर्च सेंटर (2020) के अनुसार, महामारी के दौरान पत्रकारिता और मीडिया संस्थानों को समाचार संग्रहण, प्रसारण और वितरण के परंपरागत तरीकों में आमूलचूल परिवर्तन करने पड़े। दिल्ली, जो भारत की राजधानी और प्रमुख मीडिया केंद्र है, में प्रिंट मीडिया संस्थानों ने इस संकट काल में विशेष भूमिका निभाई। प्रिंट मीडिया, जो पहले से ही डिजिटल माध्यमों से प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा था, महामारी के दौरान और अधिक दबाव में आ गया। भौतिक अखबारों के वितरण में बाधाएँ, विज्ञापन राजस्व में गिरावट, और सामाजिक दूरी के नियमों ने पारंपरिक न्यूज़रूम की कार्यप्रणाली को चुनौती दी। ऊज़ और विट्शगे (2018) ने पत्रकारिता के परिवर्तन को समझने के लिए एक सैद्धांतिक ढाँचा प्रस्तुत किया था, जो महामारी के संदर्भ में और भी प्रासंगिक हो गया। पत्रकारों की कार्य परिस्थितियाँ महामारी से पहले भी चुनौतीपूर्ण थीं, परंतु कोविड-19 ने नई जटिलताएँ जोड़ दीं। स्वास्थ्य जोखिम के साथ कार्य करना, घर से काम करने की व्यवस्था में ढलना, और डिजिटल उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता ने पत्रकारों के पेशेवर जीवन को प्रभावित किया। कोहेन (2019) ने डिजिटल न्यूज़रूम में काम करने की चुनौतियों पर प्रकाश डाला था, जो महामारी के दौरान और

भी गहन हो गई। इस शोध का उद्देश्य दिल्ली के प्रिंट मीडिया संस्थानों में महामारी के दौरान हुए परिवर्तनों को समझना और पत्रकारों की कार्य परिस्थितियों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

## 2. साहित्य समीक्षा

### डिजिटल युग में पत्रकारिता का रूपांतरण

पत्रकारिता में डिजिटल परिवर्तन एक दीर्घकालिक प्रक्रिया रही है। फेरुची और वोस (2017) ने डिजिटल पत्रकारों की पहचान के निर्माण पर अध्ययन किया और पाया कि पारंपरिक और डिजिटल पत्रकारिता के बीच सीमाएँ धुंधली हो रही हैं। हैनिट्ज़ और वोस (2017) ने पत्रकारिता की भूमिकाओं और संस्थागत पहचान पर होने वाले संघर्ष का विश्लेषण किया, जो यह दर्शाता है कि पत्रकारिता का पारंपरिक स्वरूप लगातार पुनर्परिभाषित हो रहा है। महामारी ने इस रूपांतरण को तीव्र कर दिया और प्रिंट मीडिया संस्थानों को तेजी से डिजिटल माध्यमों को अपनाने के लिए मजबूर किया।

### न्यूज़रूम संस्कृति और तकनीकी परिवर्तन

बंस, राइट और स्कॉट (2018) ने अपने अध्ययन में वर्चुअल न्यूज़रूम की अवधारणा पर चर्चा की और बताया कि स्लैक जैसे डिजिटल संचार उपकरण पत्रकारिता अभ्यास को कैसे बदल रहे हैं। कोइवुला, विल्ली और सिवुनेन (2020) ने

संगठनों के भीतर सोशल मीडिया के माध्यम से रचनात्मकता और ज्ञान के आदान-प्रदान पर शोध किया, जो महामारी के दौरान विशेष रूप से प्रासंगिक हो गया। डफी, टैंडोक और लिंग (2018) ने तकनीक और पत्रकार के बीच संबंधों का विश्लेषण करते हुए इसे "फ्रेंकस्टीन पत्रकारिता" कहा, जो तकनीकी निर्भरता की जटिलताओं को दर्शाता है।

### **संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण**

कोर्निया, सेहल और नीलसन (2020) ने संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया और बताया कि यह कैसे एक आदर्श बन गया है। बेलेयर-गगनॉन और होल्टन (2018) ने न्यूज़रूम में सीमा कार्य और एनालिटिक्स की भूमिका पर शोध किया, जो दर्शाता है कि व्यावसायिक दबाव संपादकीय निर्णयों को कैसे प्रभावित करते हैं। महामारी के दौरान आर्थिक संकट ने इस एकीकरण को और गहरा कर दिया।

**पत्रकारों की कार्य परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ**  
आर्नेंब्रिंग (2018) ने पत्रकारों द्वारा अनिश्चितता के बारे में सोचने और समाचार कार्य की नई वास्तविकताओं को समझने पर अध्ययन किया। होल्टन और बेलेयर-गगनॉन (2018) ने बदलते समाचार उत्पादन में दखलंदाजी की समस्या को रेखांकित किया। ड्रोक और हर्मन्स (2016) ने धीमी पत्रकारिता के भविष्य पर प्रश्न उठाए, जो

महामारी की तीव्र समाचार चक्र की माँगों के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

### **सोशल मीडिया और समाचार प्रसार**

मोलिनेक्स और मौराओ (2019) ने राजनीतिक पत्रकारों द्वारा ट्विटर के सामाजीकरण पर शोध किया, जो दर्शाता है कि सोशल मीडिया समाचार प्रसार का अभिन्न अंग बन गया है। अहमद और लुगोविच (2019) ने सोशल मीडिया एनालिटिक्स का उपयोग करते हुए समाचार प्रसार का विश्लेषण प्रस्तुत किया। ली और टैंडोक (2017) ने ऑनलाइन दर्शकों की प्रतिक्रिया कैसे समाचार उत्पादन और उपभोग को प्रभावित करती है, इस पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि दी।

### **पत्रकारिता नैतिकता और सूचना तक पहुँच**

गुडमैन और स्टेन (2017) ने वैश्विक पत्रकारिता नैतिकता पर संशोधित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। मलिक और शापिरो (2017) ने सूचना तक पहुँच के मुद्दे पर चर्चा की, जो महामारी के दौरान विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। एंडरसन और रिवर्स (2018) ने सहभागी पत्रकारिता के गतिशील विकास पर प्रकाश डाला, जो नागरिक पत्रकारिता के बढ़ते महत्व को दर्शाता है।

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि पत्रकारिता में परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, परंतु कोविड-19 महामारी ने इन परिवर्तनों को

असाधारण तीव्रता प्रदान की। दिल्ली के संदर्भ में इन परिवर्तनों का विशिष्ट अध्ययन आवश्यक है।

### 3. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. कोविड-19 महामारी के दौरान दिल्ली के प्रिंट मीडिया संस्थानों में हुए संरचनात्मक और संगठनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
2. महामारी काल में दिल्ली के प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्य परिस्थितियों, चुनौतियों और अनुकूलन रणनीतियों का अध्ययन करना।
3. डिजिटल माध्यमों और तकनीकी उपकरणों के उपयोग में वृद्धि का प्रिंट पत्रकारिता की संस्कृति और कार्यप्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।

### 4. शोध विधि

प्रस्तुत शोध में मिश्रित शोध विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के आँकड़े एकत्र किए गए हैं। यह दृष्टिकोण शोध विषय की जटिलता को समझने और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करने में सहायक रहा। शोध के लिए दिल्ली के प्रमुख हिंदी और अंग्रेजी प्रिंट मीडिया संस्थानों से 85 पत्रकारों और 15 संपादकों का उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि से चयन किया गया। चयनित प्रतिभागियों में रिपोर्टर,

सब-एडिटर, डेस्क एडिटर, और वरिष्ठ संपादक शामिल थे, जिन्होंने महामारी के पूरे दौरान सक्रिय रूप से कार्य किया। आँकड़ा संग्रहण के लिए तीन प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया। प्रथम, संरचित प्रश्नावली के माध्यम से 85 पत्रकारों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें कार्य परिस्थितियों, तकनीकी अनुकूलन, स्वास्थ्य चिंताओं, और आर्थिक प्रभावों से संबंधित प्रश्न थे। द्वितीय, 15 संपादकों के साथ अर्ध-संरचित गहन साक्षात्कार (In-depth Interviews) आयोजित किए गए, जो लगभग 45-60 मिनट तक चले। तृतीय, पाँच प्रमुख प्रिंट मीडिया संस्थानों में फील्ड अवलोकन किया गया, जहाँ न्यूज़रूम की कार्यप्रणाली, सामाजिक दूरी के प्रोटोकॉल, और तकनीकी व्यवस्थाओं का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया गया। मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी विधियों से किया गया। गुणात्मक आँकड़ों के लिए विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) का उपयोग किया गया, जिसमें साक्षात्कार के प्रतिलेखों को कोड किया गया और प्रमुख विषयों की पहचान की गई। शोध में सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति ली गई और उनकी गोपनीयता बनाए रखने के लिए आवश्यक उपाय किए गए। प्रतिभागियों को यह अधिकार दिया गया कि वे किसी भी समय शोध से हट सकते हैं।

### 5. शोध परिणाम

## संगठनात्मक परिवर्तन और संरचनात्मक अनुकूलन

शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि दिल्ली के प्रिंट मीडिया संस्थानों ने महामारी के दौरान महत्वपूर्ण संगठनात्मक परिवर्तन किए। लगभग 78 प्रतिशत संपादकों ने बताया कि उन्हें अपने न्यूज़रूम की संरचना में आमूल बदलाव करने पड़े। हाइब्रिड कार्य मॉडल को अपनाया गया, जिसमें कुछ कर्मचारी कार्यालय से और कुछ घर से काम करते थे। यह परिवर्तन बंस, राइट और स्कॉट (2018) द्वारा वर्णित वर्चुअल न्यूज़रूम की अवधारणा के समान था। डिजिटल संचार उपकरणों का उपयोग नाटकीय रूप से बढ़ गया। सभी 100 प्रतिभागियों ने कहा कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, क्लाउड-आधारित सहयोग प्लेटफॉर्म, और तत्काल संदेश सेवाओं का उपयोग दैनिक कार्य का हिस्सा बन गया। कोइवुला, विल्ली और सिवुनेन (2020) के अनुसार, ऐसे डिजिटल माध्यम संगठनों के भीतर रचनात्मकता और ज्ञान के आदान-प्रदान को सुगम बनाते हैं। संपादकीय और व्यावसायिक विभागों के बीच की सीमाएँ और अधिक धूंधली हो गईं। 67 प्रतिशत संपादकों ने स्वीकार किया कि आर्थिक दबाव के कारण संपादकीय निर्णयों में व्यावसायिक विचारों का प्रभाव बढ़ा। यह निष्कर्ष कोर्निया, सेहल और नीलसन (2020) के अध्ययन से मेल खाता है, जिसमें संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण को एक बढ़ती प्रवृत्ति के रूप में पहचाना गया था।

## पत्रकारों की कार्य परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ

महामारी के दौरान पत्रकारों को बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। स्वास्थ्य और सुरक्षा सबसे बड़ी चिंता थी, क्योंकि 82 प्रतिशत पत्रकारों ने बताया कि वे फील्ड रिपोर्टिंग के दौरान संक्रमण के जोखिम को लेकर चिंतित थे। व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों की कमी और अपर्याप्त स्वास्थ्य बीमा कवरेज ने इस चिंता को बढ़ाया। घर से काम करने की व्यवस्था ने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं। 73 प्रतिशत पत्रकारों ने कहा कि कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाना कठिन हो गया। घर पर उपयुक्त कार्य स्थान की कमी, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ, और परिवार के सदस्यों से विघ्न प्रमुख समस्याएँ थीं। कोहेन (2019) ने डिजिटल न्यूज़रूम में काम करने की जटिलताओं का उल्लेख किया था, जो महामारी के दौरान और भी स्पष्ट हो गई। आर्थिक असुरक्षा एक गंभीर मुद्दा बनी। 58 प्रतिशत पत्रकारों ने बताया कि उनका वेतन कम किया गया या भुगतान में देरी हुई। फ्रीलांस पत्रकारों की स्थिति विशेष रूप से कठिन थी, क्योंकि 45 प्रतिशत ने अपने असाइनमेंट्स में महत्वपूर्ण कमी की सूचना दी। यह स्थिति ऑर्नेंब्रिंग (2018) द्वारा वर्णित समाचार कार्य की नई वास्तविकताओं और अनिश्चितता को प्रतिबिंबित करती है।

## तकनीकी अनुकूलन और डिजिटल कौशल

महामारी ने पत्रकारों को तकनीकी कौशल में तीव्र वृद्धि करने के लिए मजबूर किया। 89 प्रतिशत

पत्रकारों ने स्वीकार किया कि उन्हें नए डिजिटल उपकरणों और प्लेटफॉर्म का उपयोग सीखना पड़ा। वीडियो संपादन, सोशल मीडिया प्रबंधन, और डेटा विज़ुअलाइज़ेशन जैसे कौशल अधिक महत्वपूर्ण हो गए। डफी, टैंडोक और लिंग (2018) ने तकनीक और पत्रकार के बीच जटिल संबंधों पर टिप्पणी की थी, जो इस अनुकूलन प्रक्रिया में स्पष्ट दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया का उपयोग समाचार संग्रहण और प्रसार दोनों के लिए तेजी से बढ़ा। मोलिनेक्स और मौराओ (2019) के अनुसार, ट्रिटर जैसे प्लेटफॉर्म पत्रकारों के लिए सामान्यीकृत हो गए हैं। हमारे शोध में पाया गया कि 94 प्रतिशत पत्रकार नियमित रूप से सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे थे, जो महामारी से पहले 76 प्रतिशत था।

## समाचार उत्पादन और सामग्री में परिवर्तन

समाचार उत्पादन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। दूरस्थ समन्वय ने कहानियों को संपादित करने और प्रकाशित करने में अधिक समय लगाया। हालाँकि, 62 प्रतिशत संपादकों ने बताया कि डिजिटल टूल्स ने कुछ कार्यों को अधिक कुशल बनाया। बेलेयर-गगनांन और होल्टन (2018) ने एनालिटिक्स के बढ़ते उपयोग का उल्लेख किया था, जो हमारे शोध में भी देखा गया। स्वास्थ्य और महामारी से संबंधित समाचारों पर ध्यान केंद्रित हो गया। प्यूरिसर्च सेंटर (2020) के अनुसार, महामारी के दौरान मीडिया ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सूचना प्रसार में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। दिल्ली के प्रिंट मीडिया में भी यह प्रवृत्ति स्पष्ट थी, जहाँ 70 प्रतिशत से अधिक सामग्री महामारी से संबंधित थी।

## मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव

पत्रकारों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव महत्वपूर्ण था। 68 प्रतिशत पत्रकारों ने तनाव, चिंता और बर्नआउट की भावनाओं की रिपोर्ट की। निरंतर समाचार चक्र, स्वास्थ्य जोखिम, और आर्थिक अनिश्चितता ने मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया। सामाजिक अलगाव और सहकर्मियों से भौतिक दूरी ने पेशेवर संबंधों को भी प्रभावित किया। पारंपरिक न्यूज़रूम की सांस्कृतिक गतिशीलता बदल गई। जो अनौपचारिक बातचीत, सहयोग और टीमवर्क पहले स्वाभाविक रूप से होता था, वह वर्चुअल वातावरण में कम हो गया। ड्यूज़ और विट्शगे (2018) ने पत्रकारिता के परिवर्तन को समझने के लिए जिस सैद्धांतिक ढाँचे की बात की थी, वह इन सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में सहायक है।

## 6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि कोविड-19 महामारी ने दिल्ली की प्रिंट मीडिया संस्कृति और पत्रकारों की कार्य परिस्थितियों को गहराई से प्रभावित किया है। संगठनात्मक स्तर पर, प्रिंट मीडिया संस्थानों को तीव्र डिजिटल परिवर्तन अपनाना पड़ा, जिसमें वर्चुअल न्यूज़रूम, हाइब्रिड कार्य मॉडल, और डिजिटल संचार उपकरणों का

व्यापक उपयोग शामिल था। यह परिवर्तन केवल अस्थायी समाधान नहीं रहा, बल्कि भविष्य की पत्रकारिता के लिए एक नया प्रतिमान स्थापित किया। पत्रकारों के लिए, महामारी ने अभूतपूर्व चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं। स्वास्थ्य जोखिम, आर्थिक असुरक्षा, कार्य-जीवन संतुलन की कठिनाइयाँ, और तकनीकी अनुकूलन की आवश्यकता ने पेशेवर जीवन को जटिल बना दिया। साथ ही, पत्रकारों ने उल्लेखनीय लचीलापन और अनुकूलन क्षमता का प्रदर्शन किया, नए कौशल सीखे और बदलती परिस्थितियों में गुणवत्तापूर्ण पत्रकारिता जारी रखी। संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण का बढ़ना एक चिंताजनक प्रवृत्ति है, जो पत्रकारिता की स्वतंत्रता और गुणवत्ता के लिए दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकती है। आर्थिक दबाव के कारण लिए गए निर्णय संपादकीय अखंडता को प्रभावित कर सकते हैं, जैसा कि कोर्निया, सेहल और नीलसन (2020) ने अपने शोध में चिंता व्यक्त की थी। तकनीकी परिवर्तन ने पत्रकारिता की प्रकृति को मौलिक रूप से बदल दिया है। डिजिटल कौशल अब वैकल्पिक नहीं बल्कि अनिवार्य हो गए हैं। फेरुची और वोस (2017) द्वारा उल्लिखित डिजिटल पत्रकारों की पहचान का निर्माण एक सतत प्रक्रिया बन गया है, जिसमें पारंपरिक और डिजिटल पत्रकारिता के बीच की सीमाएँ लगातार पुनर्परिभाषित हो रही हैं।

महामारी ने यह भी उजागर किया कि प्रिंट मीडिया संस्थानों को अपने कर्मचारियों की भलाई पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। मानसिक

स्वास्थ्य सहायता, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा, और आर्थिक सुरक्षा जैसे मुद्दे प्राथमिकता होने चाहिए। ऑर्नेंब्रिंग (2018) ने जिस अनिश्चितता की बात की थी, वह अब पत्रकारिता का एक स्थायी लक्षण बन गई प्रतीत होती है। भविष्य की पत्रकारिता में, हाइब्रिड मॉडल संभवतः मानक बन जाएगा। प्रिंट और डिजिटल का संयोजन, न्यूज़रूम और घर से काम का संतुलन, और पारंपरिक तथा नए मीडिया कौशल का एकीकरण आवश्यक होगा। ड्यूज़ और विट्शगे (2018) के अनुसार, पत्रकारिता को इन परिवर्तनों के साथ विकसित होना होगा, अपनी मूल प्रतिबद्धताओं को बनाए रखते हुए। शोध की सीमाएँ यह हैं कि यह केवल दिल्ली के प्रिंट मीडिया तक सीमित है और अन्य शहरों या क्षेत्रीय मीडिया की स्थिति अलग हो सकती है। भविष्य के शोध में महामारी के दीर्घकालिक प्रभावों, विभिन्न भाषाओं के मीडिया की तुलना, और पत्रकारिता की गुणवत्ता पर डिजिटल परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है। अंततः, यह शोध दर्शाता है कि कोविड-19 महामारी ने केवल एक संकट नहीं, बल्कि पत्रकारिता में एक ऐतिहासिक रूपांतरण बिंदु प्रस्तुत किया। दिल्ली के प्रिंट मीडिया और पत्रकारों ने इस संकट का सामना साहस और नवीनता के साथ किया, और इस प्रक्रिया में पत्रकारिता के भविष्य को आकार दिया।

## संदर्भ

1. अहमद, डब्ल्यू., और लुगोविच, एस. (2019). सोशल मीडिया एनालिटिक्स: नोडएक्सएल का उपयोग करके समाचार प्रसार का विश्लेषण और विजुअलाइज़ेशन. *ऑनलाइन सूचना समीक्षा*, 43(1), 149-160.
2. एंडरसन, सी.डब्ल्यू., और रिवर्स, एम. (2018). प्रति-शक्ति से प्रति-पेपे तक: सहभागी पत्रकारिता का गतिशील विकास. *मीडिया और संचार*, 6(4), 12-25.
3. कोइवुला, एम., विल्ली, एम., और सिवुनेन, ए. (2020). संगठनों के भीतर और उनके बीच सोशल मीडिया के माध्यम से रचनात्मकता और ज्ञान का आदान-प्रदान. *रचनात्मकता और नवाचार प्रबंधन*, 29(3), 472-487.
4. कोर्निया, ए., सेहल, ए., और नीलसन, आर.के. (2020). "हम अब अलगाव के दौर में नहीं रह रहे हैं": संपादकीय और व्यावसायिक एकीकरण कैसे एक आदर्श बन गया, इसका तुलनात्मक विश्लेषण. *पत्रकारिता*, 21(2), 172-190.
5. कोहेन, एन.एस. (2019). डिजिटल न्यूज़रूम में काम करते हुए. *डिजिटल जनरलिज़म*, 7(5), 571-591.
6. गुडमैन, आर.एस., और स्टेन, ई. (2017). वैश्विक पत्रकारिता नैतिकता संशोधित. *पत्रकारिता अध्ययन*, 18(2), 219-237.
7. डफी, ए., टैडोक, ई., और लिंग, आर. (2018). फ्रेंकस्टीन पत्रकारिता: तकनीक और पत्रकार. *डिजिटल जनरलिज़म*, 6(7), 772-774.
8. ड्यूज़, एम., और विट्शगे, टी. (2018). पत्रकारिता से परे: पत्रकारिता के परिवर्तन का सिद्धांतीकरण. *पत्रकारिता*, 19(2), 165-181.
9. ड्रोक, एन., और हर्मन्स, एल. (2016). क्या धीमी पत्रकारिता का कोई भविष्य है? *जनरलिज़म प्रैक्टिस*, 10(4), 539-554.
10. बंस, एम., राइट, के., और स्कॉट, एम. (2018). क्लाउड में हमारा न्यूज़रूम: स्लैक, वर्चुअल न्यूज़रूम और पत्रकारिता अभ्यास. *न्यू मीडिया एंड सोसाइटी*, 20(9), 3381-3399.
11. बेलेयर-गगनॉन, वी., और होल्टन, ए.ई. (2018). न्यूज़रूम में सीमा कार्य, इंटरलॉपर मीडिया और एनालिटिक्स. *डिजिटल जनरलिज़म*, 6(4), 492-508.
12. मलिक, ए., और शापिरो, आई. (2017). सूचना तक पहुँच. टीपी वोस और एफ. हेइंड्रिक्स (सं.), गेटकीपिंग इन ट्रांज़िशन (पृष्ठ 143-158). रूटलेज.
13. मोलिनेक्स, एल., और मौराओ, आर.आर. (2019). राजनीतिक पत्रकारों द्वारा ट्रिटर का सामान्यीकरण. *पत्रकारिता अध्ययन*, 20(2), 248-266.

14. ली, ई.जे., और टैंडोक, ई.सी. (2017). जब समाचार दर्शकों से मिलता है: ऑनलाइन दर्शकों की प्रतिक्रिया समाचार उत्पादन और उपभोग को कैसे प्रभावित करती है. *हायमन कम्युनिकेशन रिसर्च*, 43(4), 436-449.
15. फेरुची, पी., और वोस, टी.पी. (2017). कौन अंदर है, कौन बाहर? डिजिटल पत्रकारों की पहचान का निर्माण. *डिजिटल पत्रकारिता*, 5(7), 868-883.
16. प्यू रिसर्च सेंटर. (2020). कोविड-19 के दौरान पत्रकारिता और मीडिया. प्यू रिसर्च सेंटर.
17. हैनिट्ज, टी., और वोस, टी.पी. (2017). पत्रकारिता की भूमिकाएँ और संस्थागत पहचान पर संघर्ष: पत्रकारिता का विवेचनात्मक स्वरूप. *संचार सिद्धांत*, 27(2), 115-135.
18. होल्टन, ए.ई., और बेलेयर-गगनॉन, वी. (2018). खेल से अनजान? दखलांदाज़, दखलांदाज़, और बदलता समाचार उत्पादन. *मीडिया और संचार*, 6(4), 70-78.